भाषा की कक्षा में विज्ञान और वैज्ञानिक नज़रिया

मनोहर चमोली
पौड़ी (गढ़वाल) उत्तराखण्ड

इस दुनिया को सामने रखने का गुण भाषा में ही निहित है, भाषा कल्पना और अनुमान के सहारे हमारे जीवन को समृद्ध भी करती है। मनुष्य में सौन्दर्यबोध जगाने और उसे बचाए रखने का माध्यम भी भाषा ही है। मनुष्य, सौंदर्यबोध की प्रशंसा मात्र से ही शांत नहीं होता। वह उन नियमों को खोजने लगता है जो सौंदर्यपरक पहलूओं को तय करते हैं। भाषा ही है जो छात्रों को अन्वेषक बनाती है। उनमें खोजबीन की आदत विकसित करती है। भाषा की कक्षा में सवाल उठाने और सवालों का जवाब देने के भरपूर अवसर मौजूद होते हैं। भाषा की कक्षा ही तो है, जहां विस्तार की गुंजाइश हमेशा रहती है, और एक सवाल के जवाबों में विविधता बनी रहती है। भाषा की कक्षा में बातचीत के अनवरत मौके दिए जाते हैं।

कक्षा में भले ही कहानी या कविता के माध्यम से पाठ पढ़ाया जा रहा होता है, प्रयास रहता है कि, उसे छात्रों के जीवन से जोड़ा जाए। उन सवालों पर बात की जाए जो प्रश्न–अभ्यास का हिस्सा नहीं भी होते हैं। (सन्दर्भ : अंतोन चेखव की कहानी रीढ़विहीन, पाठ्य पुस्तक बुराँश, कक्षा 7, उत्तराखण्ड। इस कहानी के माध्यम से उपहास, शोषण और दूसरे के हकों को न मारने के संबंध में व्यापक चर्चा संभव होती है। वहीं आदमी और आदमी के मध्य एक बेहतर इंसान बनने की बातचीत संभव होती है।)

किसी बात, प्रकरण या समस्या का समाधान भाषा के जरिए ही आगे बढ़ता है। आत्मज्ञान, शिक्षा के लक्ष्यों में एक है। खुद को खोजने के साथ स्वयं सच्चाई को जानने की निरन्तर प्रक्रिया पर भी बल दिया गया है। छात्रों में साहित्य की रुचि के साथ–साथ तर्क करने और वैज्ञानिक अन्वेषण के विकास पर भी जोर दिया गया है। अमेरिकी शिक्षा विभाग के शिक्षा, शोध एवं सुधार कार्यालय द्वारा तैयार की गई एक पुस्तक में कहा गया है–'बच्चों को विज्ञान सीखने में मदद देने के लिए यह कतई जरूरी नहीं कि आपकी विज्ञान में गहरी पकड़ हो। उदाहरण के लिए–ध्वनि क्या है या दूरबीन किस तरह काम करती है, जैसी बातों को जानने से ज्यादा जरूरी है, विज्ञान के प्रति एक सकारात्मक नजरिया। हर दिन विज्ञान सीखने की सम्भावनाओं से भरा हुआ है, और इसके लिए रसायन विज्ञान के मंहगे किट या किताबों की भी जरूरत नहीं। बच्चों का परिचय बड़ी आसानी से प्रकृति की प्रयोगशाला से कराया जा सकता है और उन्हें आसपास घट रही घटनाओं को गौर से देखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।'

भाषा की कक्षा में यह जरूर समझा जाता है कि भाव–बोध के साथ जीवन के यथार्थ को समझने के लिए, वैज्ञानिक नज़रिए को भी प्रमुखता दी जाए। (सन्दर्भ : एच०जी० वेल्स की कहानी अनोखी घाटी, एक ऐसी दुनिया की कल्पना कराने में सहायक है, जहां के इंसानों की आंखें ही नहीं हैं। उनकी दुनिया में दिखाई देना कोई शब्द ही नहीं है। सन्दर्भः पाठ्यपुस्तक बुराँश, कक्षा 7 इस कहानी के माध्यम से छात्रों में अपने आस–पास ऐसे इंसानों के साथ नम्रता, सहयोग और संवेदनशीलता बरतने की ओर चर्चा की गई है, जिनकी आंखें नहीं हैं, जो असहाय हैं। वहीं मानवीय कमजोरियों के साथ प्रकृति प्रदत्त क्षमताओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।)

नैन्सी पाउलू लिखते हैं:–'छोटे बच्चे, विज्ञान और वैज्ञानिक अवधारणाओं को सबसे अच्छी तरह तब सीखते हैं जब, उन्हें खुद से खोजने और प्रयोग करने का मौका मिलता है। लेकिन वे वैज्ञानिक ढंग से सोचना सीख जाएं, इसका सबसे अच्छा तरीका यही हो सकता है कि, उन्हें कुछ

विषयों को गहराई से समझने का मौका दिया जाए।' भाषा की कक्षा में हर पाठ विज्ञान सम्मत संभावनाओं से परिपूर्ण नहीं होता है। लेकिन हर पाठ से हम वैज्ञानिक नजरिये को बढ़ाने के अवसर तलाश लेते हैं।

भाषा के अध्यापक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर छात्रों में रूढ़ियों को तोड़ने और तर्क करने की क्षमता विकसित करते हैं। बुराँश पाठ्य पुस्तक, कक्षा 6 में साहिर लुधियानवी का गीत, साथी हाथ बढ़ाना, शामिल है। भाषा की कक्षा में यह गीत, मात्र व्याख्या के लिए नहीं गाया जाता। इस गीत की ताकत तब और बढ़ जाती है, जब गीत का छात्र अपने सामाजिक जीवन और दैनिक जीवन के कार्यों के साथ संबंध जोड़ने लगता है। भाषा की कक्षा में पाठ पढ़ाते समय इस तरह के संवादों की गुंजाइश रहती है, जिससे छात्रों में संवेदनशीलता बनी रहे, और बची रहे। इस पाठ के बहाने छात्र संवेदना के स्तर पर मजूदर और आम कामगारों के प्रति ऐसा नजरिया बना पाते हैं, जो घर–परिवार के सदस्यों के समान रखा जाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र कहता हैः–'कक्षा ऐसी जगह है, जहाँ विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ के बीच कई तरह के जटिल स्तरों पर संवाद होता है, और इस संवाद में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, और निभाने की ज़रूरत भी है। हमारे अनुसार पेशेवर–प्रशिक्षित और सामाजिक रूप से संवेदनशील शिक्षकों का कोई विकल्प नहीं हो सकता।' (पाठ्य पुस्तक बुरांश, कक्षा 7 में हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'क्या निराश हुआ जाए' एक ऐसे समाज के निर्माण में हम सबकी बेहतर भूमिका सुनिश्चित करने के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होता है। यह पाठ, विविधता से भरे कई संवादों को जन्म देता है। इस पाठ के बहाने छात्रों के साथ उनके आस–पास के जीवन से जुड़े मुद्दों पर बात करना सरल होता है।)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र अपनी सिफारिशों में कहता हैः–'भाषाओं में उच्च स्तरीय दक्षता प्राप्ति के बिना गणित,समाज विज्ञान और विज्ञान में समझ और उपलब्धि के स्तर का विकास संभव नहीं है।' यही कारण है कि भाषा की कक्षा में भाषाई कौशलों के विकास की संभावनाओं के साथ–साथ वैज्ञानिक समझ बढ़ाने और विज्ञान सम्मत मुद्दों–प्रकरणों पर चर्चा जरूरी है।' भाषा की कक्षा में पाठ्यपुस्तक के किसी भी पाठ को सतही तौर पर नहीं पढ़ाया जा सकता। छात्रों में अपने आस–पास के जीवन से अंगीकृत कई धारणाएं रूढ़ हो सकती हैं। वे बनी रह सकती हैं। भाषा की कक्षा ऐसे में अत्याधुनिक विचार देने में सफल होती है। भाषा की कक्षा ही तो है जो, छात्रों के विचारों में वैज्ञानिक नज़रिए को स्थापित करने में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती है। कक्षा 8 में विद्यासागर नौटियाल की कहानी, है सोना। यह कहानी अभागिन, अंधविश्वास, भाग्य, लालच आदि पर व्यापक बहस कराने की संभावनाएं लिए हुए है। भाषा की कक्षा को समाज के सन्दर्भ में अलग रखकर संचालित नहीं किया जा सकता।

भारतीय भाषाओं का आधार पत्र कहता भी हैः–'भाषाएं देश–कालबद्ध जैसी कोई जमी हुई चीज़ें नहीं हैं, बल्कि वे लगातार बदलते हुए व्यवहारों की लचीली व्यवस्था हैं, जिन्हें मनुष्य खुद को और अपने आसपास के जगत को समझने के क्रम में सीखता और बदलता रहता है। अक्सर भाषाओं को तत्वों के रूप में लिया जाता है और लोग उनके बारे में रूढ़ी धारणाएं बना लेते हैं। हमें भाषा के इन दोनों पक्षों का ध्यान रखना होगा।'

प्रस्तुत लेख इस बात पर फोकस है कि, भाषा की कक्षा अन्य विषयों को समृद्ध करने में बेहतर भूमिका निभाती है। यह लेख, केवल और केवल इस बात पर केन्द्रित है कि उत्तराखण्ड में सार्वजनिक विद्यालयों की उच्च प्राथमिक भाषा कक्षाएं मात्र विचारों का आदान–प्रदान कराने का माध्यम नहीं है। बल्कि कक्षाओं में छात्र अपनी समझ को विकसित करते हुए वैज्ञानिक शिक्षा की ओर उन्मुख होते हैं। वे दैनिक जीवन में वैज्ञानिक नजरिए को स्थान देने लगते हैं और आस–पास पसरी जड़ताओं से खुद को मुक्त करने लगते हैं।